

179B

# कलकत्ता का बिशप पैलेस: एक औपनिवेशिक संपत्ति का संघर्ष (1824-1849)

एक स्थायी निवास की खोज में नौकरशाही, जीर्ण  
इमारतें, और गुप्त सौदेबाजी की कहानी।

अपराधशास्त्रीय अंतर्दृष्टि द्वारा  
डॉ. मृदुल श्रीवास्तव

179B

# कोलकाता में एपिस्कोपल निवास का इतिहास: 1824-1849

(History of the Episcopal Residence in Calcutta: 1824-1849)

## 1823-1831: शुरुआती संघर्ष और अस्थायी निवास



**1823: बिशप हेबर का आगमन और शुरुआती आवास**

फोर्ट विलियम में रहे, लेकिन अस्वस्थ वातावरण के कारण वहां से चले गए।



**1823: बिशप हेबर का आगमन और शुरुआती आवास**

फोर्ट विलियम में रहे, लेकिन अस्वस्थ वातावरण



**मिडलटन प्लेस (अब लोरेटो हाउस)**



**1824: 600 रुपये मासिक किराए पर**

एक बड़ा घर लिया गया, जिसे बाद में असुरक्षित माना गया।



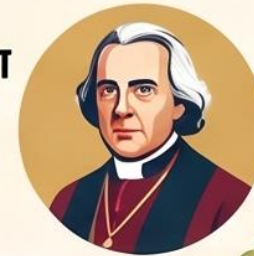
**सुरक्षा और मरम्मत को लेकर विवाद**

1826: आर्कडेकन कोरी ने इमारत को असुरक्षित बताया, जिससे सरकार और मालिकों के बीच लंबा विवाद चला।

## 1832-1849: बिशप विल्सन और स्थायी समाधान

**1832: रसेल स्ट्रीट में स्थानांतरण**

बिशप विल्सन कोलकाता पहुंचे और रसेल स्ट्रीट स्थित घर में रहने लगे।



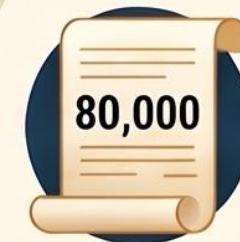
**रसेल स्ट्रीट**



**नया महल**

**1849: नए महल की प्राप्ति**

बिशप विल्सन ने पुसने निवास के बदले एक नया महल (Palace) प्राप्त करने के लिए सफलतापूर्वक बातचीत की।



**संपत्ति का विनिमय और मूल्य**

पुराने महल का मूल्य 80,000 रुपये था, जिसे नए निवास के सोदे के हिस्से के रूप में बदला गया।

### निवास के स्थान (Summary of Residences)

|      |                               |                               |
|------|-------------------------------|-------------------------------|
| 1823 | फोर्ट विलियम (गवर्नमेंट हाउस) | स्वास्थ्य कारणों से अनुपयुक्त |
| 1824 | मिडलटन प्लेस (नंबर 5)         | वर्तमान में लोरेटो हाउस       |
| 1832 | रसेल स्ट्रीट (नंबर 5)         | बिशप विल्सन का निवास          |

# ईस्ट इंडिया कंपनी का भूला हुआ वादा (1823)



कंपनी ने उन्हें एक घर देने का वादा किया था, लेकिन इस संबंध में कोई आदेश भेजना भूल गई।

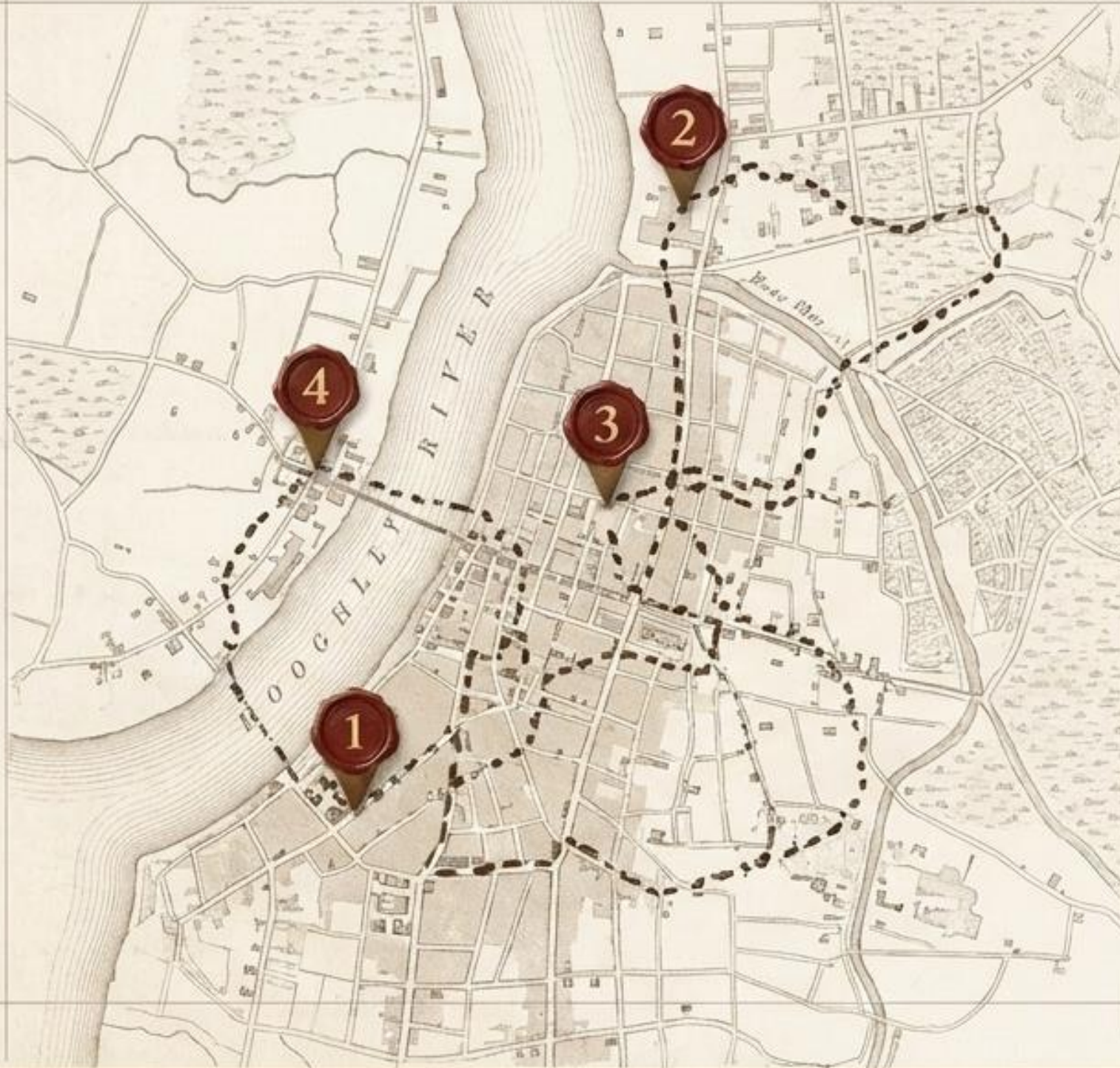
**नायक:** बिशप हेबर - अक्टूबर 1823 में कलकत्ता आगमन।

**समस्या:** कंपनी ने निवास का वादा किया था, लेकिन कोई आदेश नहीं भेजा।

**अस्थायी समाधान:** फोर्ट विलियम के सरकारी हाउस में प्रारंभिक ठहराव।

**भत्ता:** किराए के लिए ₹500 से ₹600 प्रति माह की स्वीकृति।

# बिशप हेबर की भटकन: एक साल, चार ठिकाने



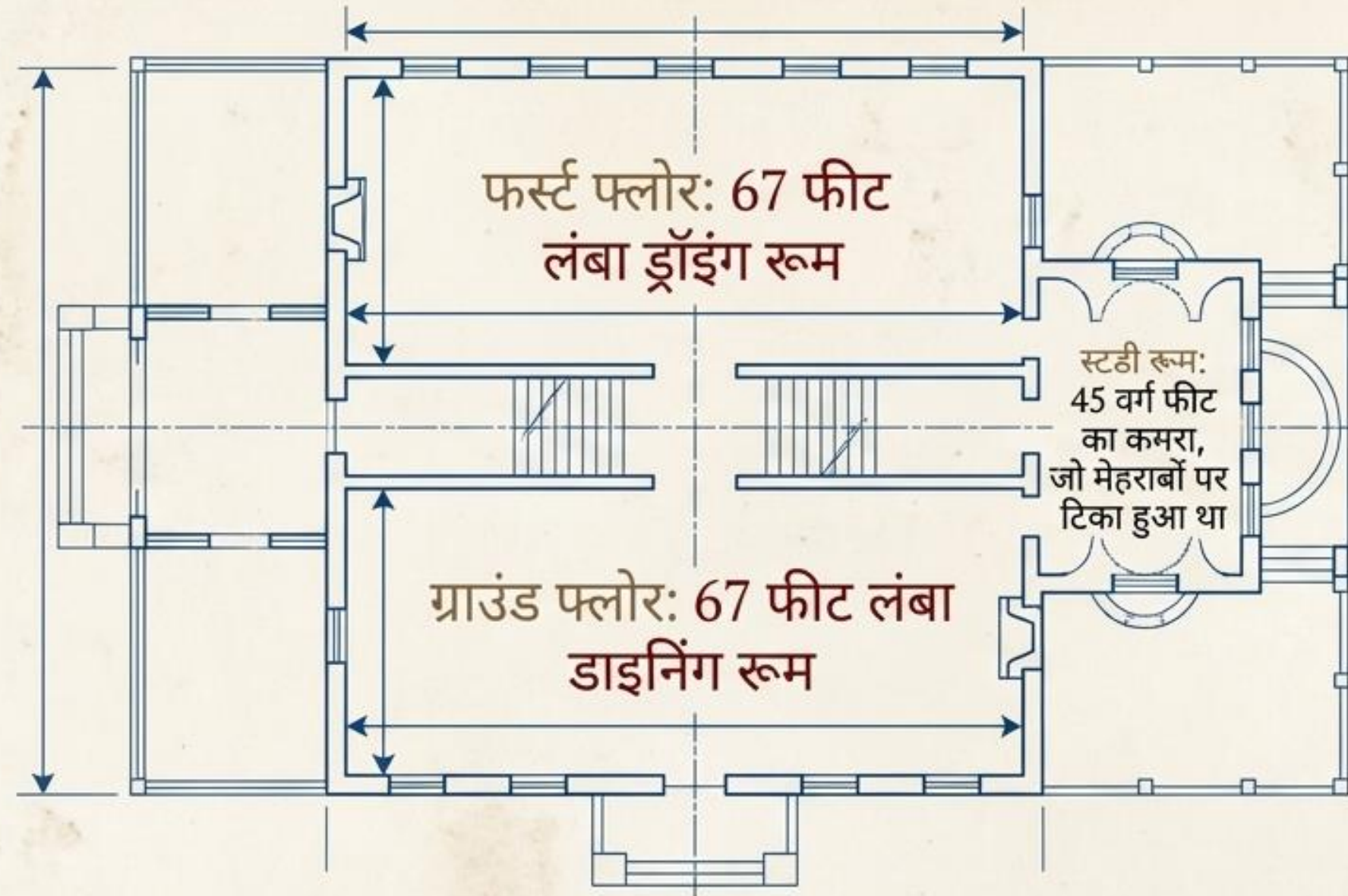
1. अक्टूबर 1823: फोर्ट विलियम - अस्थायी आश्रय।

2. जनवरी 1824: टीटागढ़ - अस्वस्थ वातावरण और चिंता।

3. मार्च 1824: 3, हैरिंगटन स्ट्रीट, चौरंगी - ₹500 किराया, कैथेड्रल से दूर और बहुत छोटा।

4. अप्रैल 1824: 5, मिडलटन प्लेस - ₹600 का किराया। एक विशाल (लेकिन अस्थायी) निवास।

# औपनिवेशिक भव्यता: 5 मिडलटन प्लेस का पैमाना



बिशप हेबर का पत्र: “हम एक ऐसे घर में हैं जो हमारे आराम के सभी विचारों से कहीं बड़ा है। मैं 67 फीट लंबे डाइनिंग रूम में खुद को खोया हुआ महसूस करता हूँ।”

# रसेल स्ट्रीट का पट्टा: एक महंगी और अस्थायी राहत

1 जनवरी 1826 से 5 रसेल स्ट्रीट को 11 वर्षों के लिए किराए पर लिया गया।

## सरकारी प्रस्ताव (1824)

शर्त: नया घर बनाने की लागत  
₹60,000 से अधिक नहीं होनी चाहिए।

निर्णय: गवर्नर जनरल ने इसे  
अव्यावहारिक माना और किराए को  
प्राथमिकता दी।

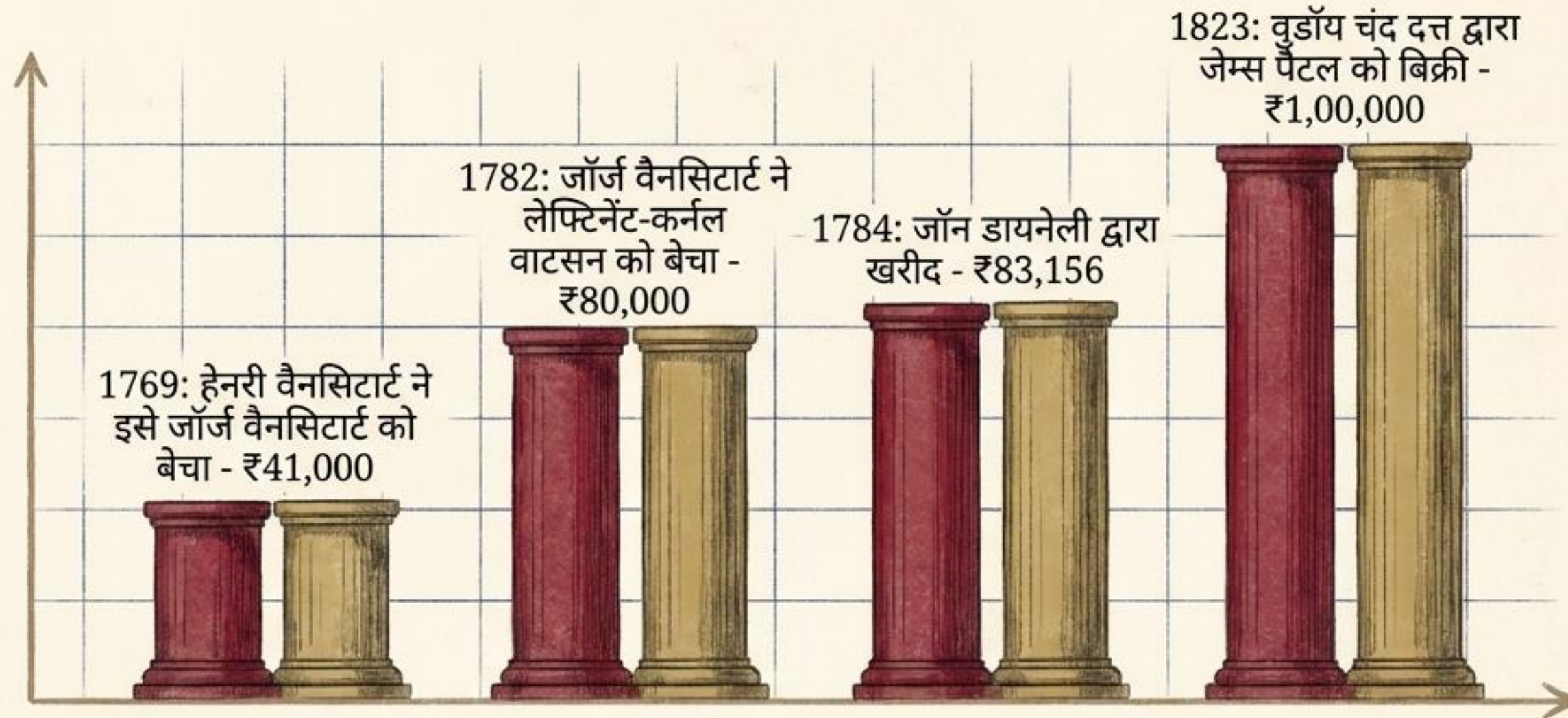
## किराए की वास्तविकता

मासिक किराया: ₹600

पट्टे की अवधि: 11 वर्ष (132 महीने)

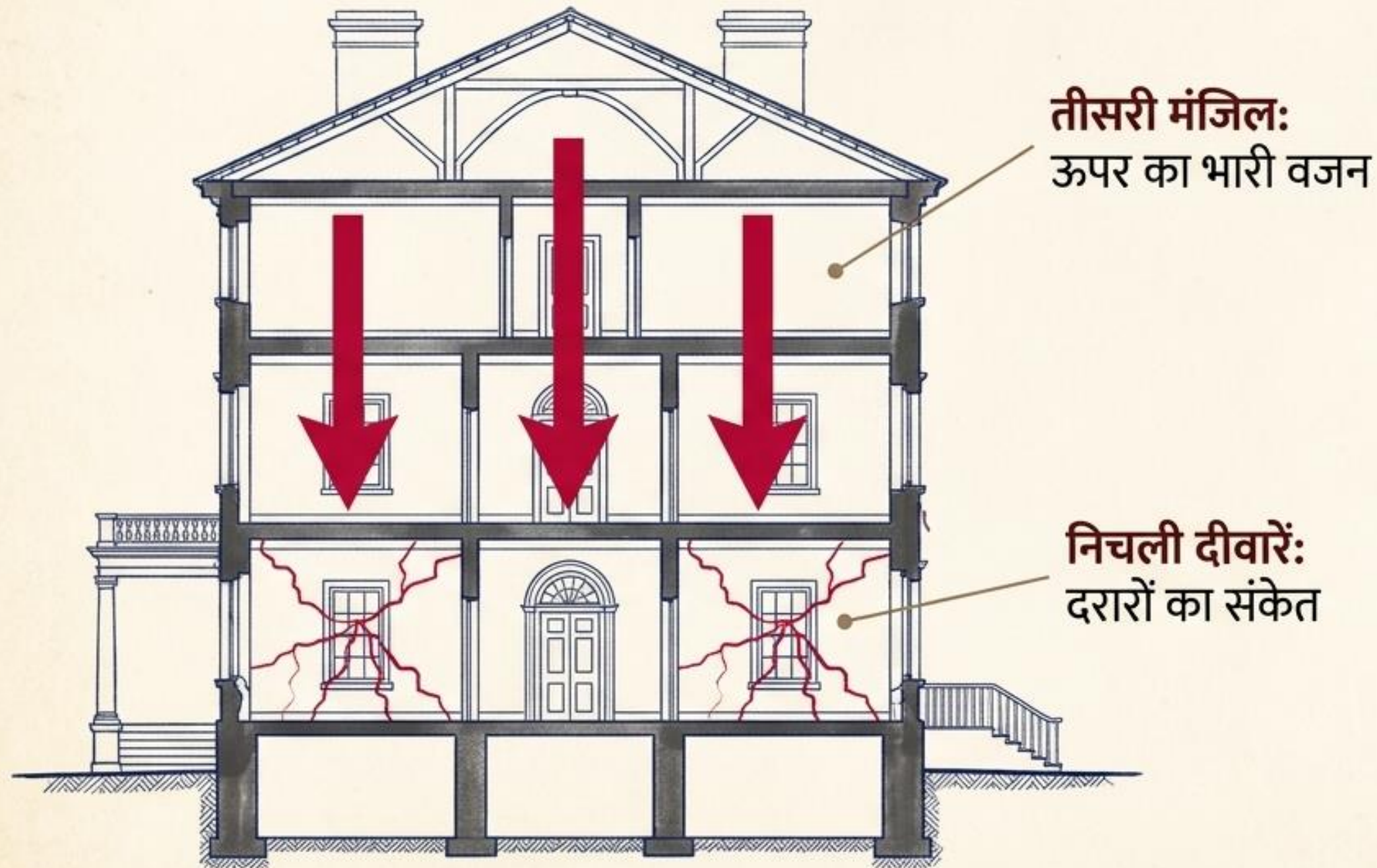
**कुल खर्च: ₹79,200** (जो नया घर  
बनाने के ₹60,000 के बजट से कहीं  
अधिक था!)

## कलकत्ता का रियल एस्टेट बूम: रसेल स्ट्रीट का इतिहास (1769 - 1823)



मुख्य निष्कर्ष: मात्र 50 वर्षों में संपत्ति के मूल्य में 143% की वृद्धि, जो कलकत्ता के तेजी से बढ़ते संपत्ति बाजार को दर्शाती है।

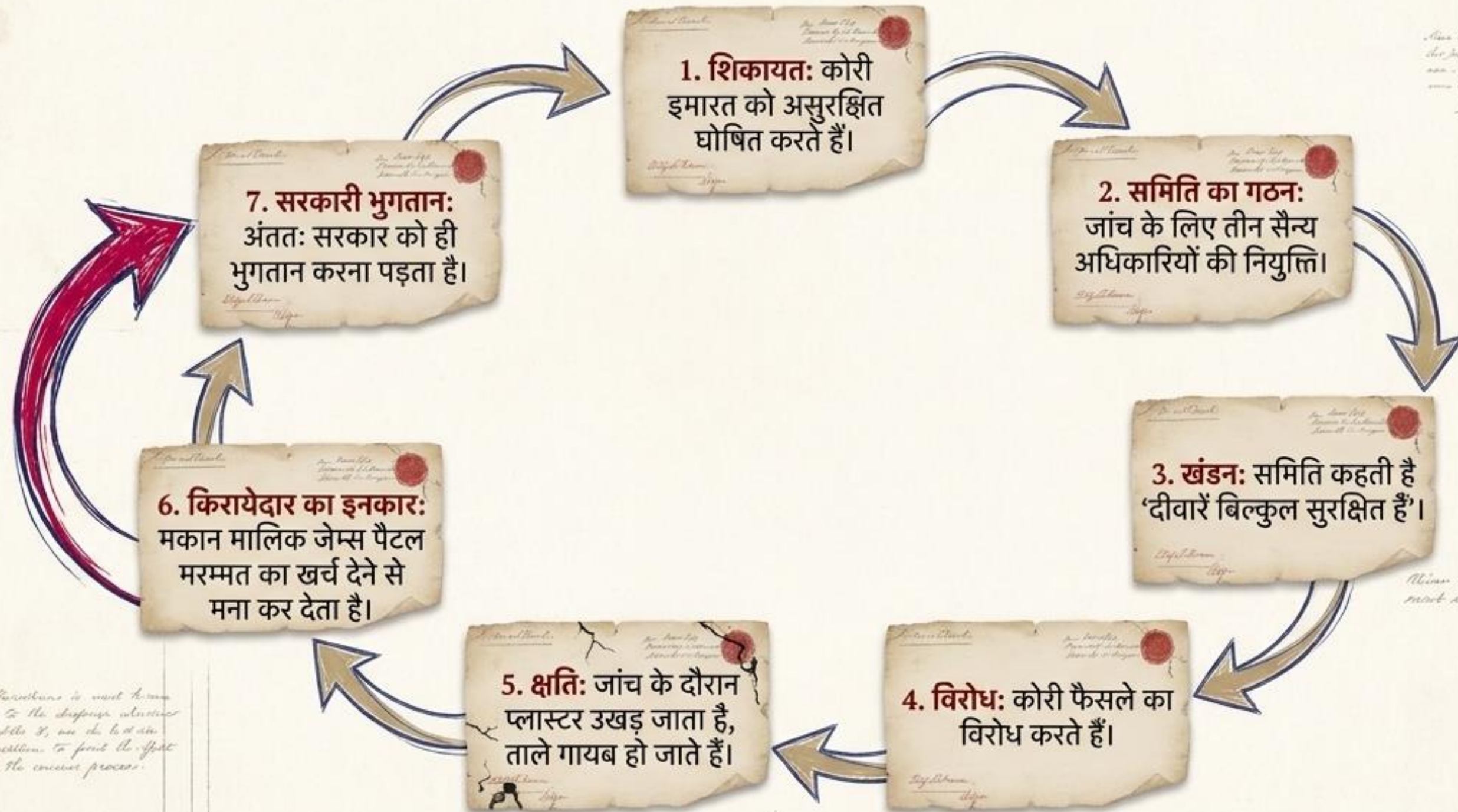
# खतरनाक दीवारें: आर्कडीकन कोरी की चेतावनी (1826)



**अक्टूबर 1826:**  
आर्कडीकन कोरी ने सरकार को पत्र लिखा कि इमारत असुरक्षित है।

**चिंता का मुख्य कारण:**  
तीसरी मंजिल का भारी वजन दीवारों पर अत्यधिक दबाव डाल रहा था।

# मरम्मत का अंतहीन नौकरशाही चक्र (1826-1828)



# पट्टे की बेड़ियाँ: बिशप जेम्स और टर्नर का संघर्ष

## बिशप जेम्स (1827)

- लंबे समय तक खाली रहने के कारण घर जर्जर स्थिति में मिला।
- छूटे हुए प्लास्टर और गायब लोहे की छड़ों के साथ रहना पड़ा।

पट्टा  
1837 तक  
बाध्यकारी

## बिशप टर्नर (1830)

- निवास बदलने का अनुरोध किया।
- सरकार का जवाब: अस्वीकार। एपिस्कोपल पैलेस के लिए पट्टा लिया जा चुका है, इसे रद्द नहीं किया जा सकता।

# जब दीवारें सचमुच दरकने लगीं (1831)

## 1826 समिति की रिपोर्ट (गलत साबित हुई)

मकान पूरी तरह सुरक्षित है।  
दीवार तीसरी मंजिल का वजन  
उठाने में सक्षम है।



## 1831 बिल्डर की रिपोर्ट (सच्चाई)

जून 1831: बिल्डर मिस्टर पार्कर ने  
बिशप के अनुरोध पर जांच की।

निष्कर्ष: उत्तर और दक्षिण की  
मुख्य दीवारें **असुरक्षित** घोषित।



आर्कडीकन कोरी की 5 साल पुरानी चेतावनी अंततः सच साबित हुई।  
व्यापक मरम्मत के बाद ही नवंबर 1831 में घर फिर से रहने लायक बन सका।

# बिशप विल्सन का आगमन: एक कुशल रणनीतिकार

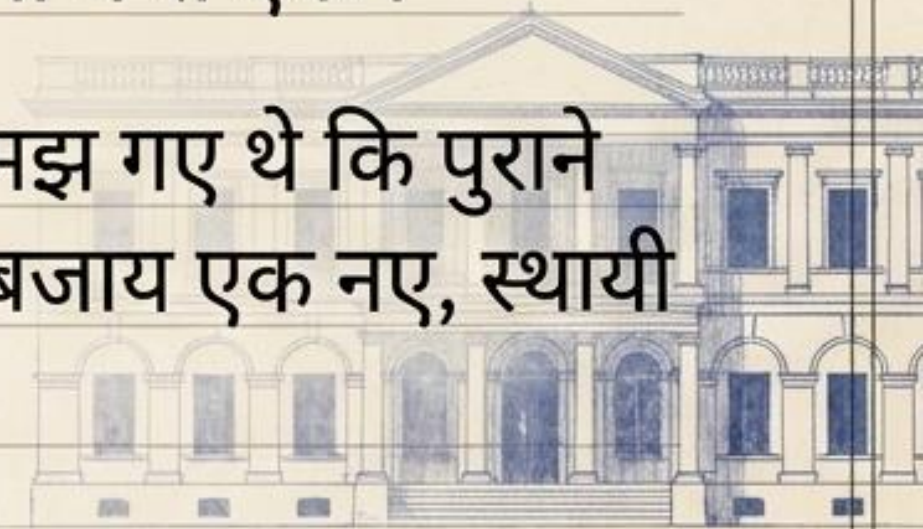


कार्यकाल की शुरुआत: नवंबर 1832 में कलकत्ता  
आगमन।

स्थिति: 1838 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने ₹75,000 में  
पैटल से वही पुराना घर खरीद लिया।

लॉर्ड डलहौज़ी की टिप्पणी: 'मेरे द्वारा देखे गए व्यापारिक  
मामलों के सबसे बेहतरीन व्यक्तियों में से एक'।

दृष्टिकोण: 1849 तक, विल्सन समझ गए थे कि पुराने  
और जर्जर रसेल स्ट्रीट निवास के बजाय एक नए, स्थायी  
पैलेस की आवश्यकता है।



# चौरंगी रोड का नया पैलेस: 6 दिनों की गुप्त सौदेबाजी (1849)

23 मार्च: विल्सन ने चौरंगी रोड पर मिस्टर विल्बरफोर्स बर्ड के घर का निरीक्षण किया।

25-26 मार्च: ₹49,000 में घर सुरक्षित करने के लिए गुप्त रूप से बातचीत।

27 मार्च: गोपनीयता बनाए रखने के लिए काउंसिल के अध्यक्ष को आधिकारिक पत्र।

28 मार्च: निजी पत्र लिखा ताकि सरकार की त्वरित सहमति मिल सके।



अत्यधिक गोपनीयता और तत्परता आवश्यक है, अन्यथा कीमत बढ़ जाएगी... यदि कोई नुकसान होता है, तो मैं स्वयं उसकी भरपाई करूंगा। - बिशप विल्सन

# संपत्ति का मूल्यांकन: पुराना रसेल स्ट्रीट बनाम नया चौरंगी पैलेस

## पुराना पैलेस (रसेल स्ट्रीट)

कंपनी की खरीद कीमत (1838):  
₹80,000

एडवोकेट जनरल का मूल्यांकन  
(1849): मात्र ₹60,000 (मूल्य में भारी  
गिरावट)।

## नया पैलेस (चौरंगी रोड)

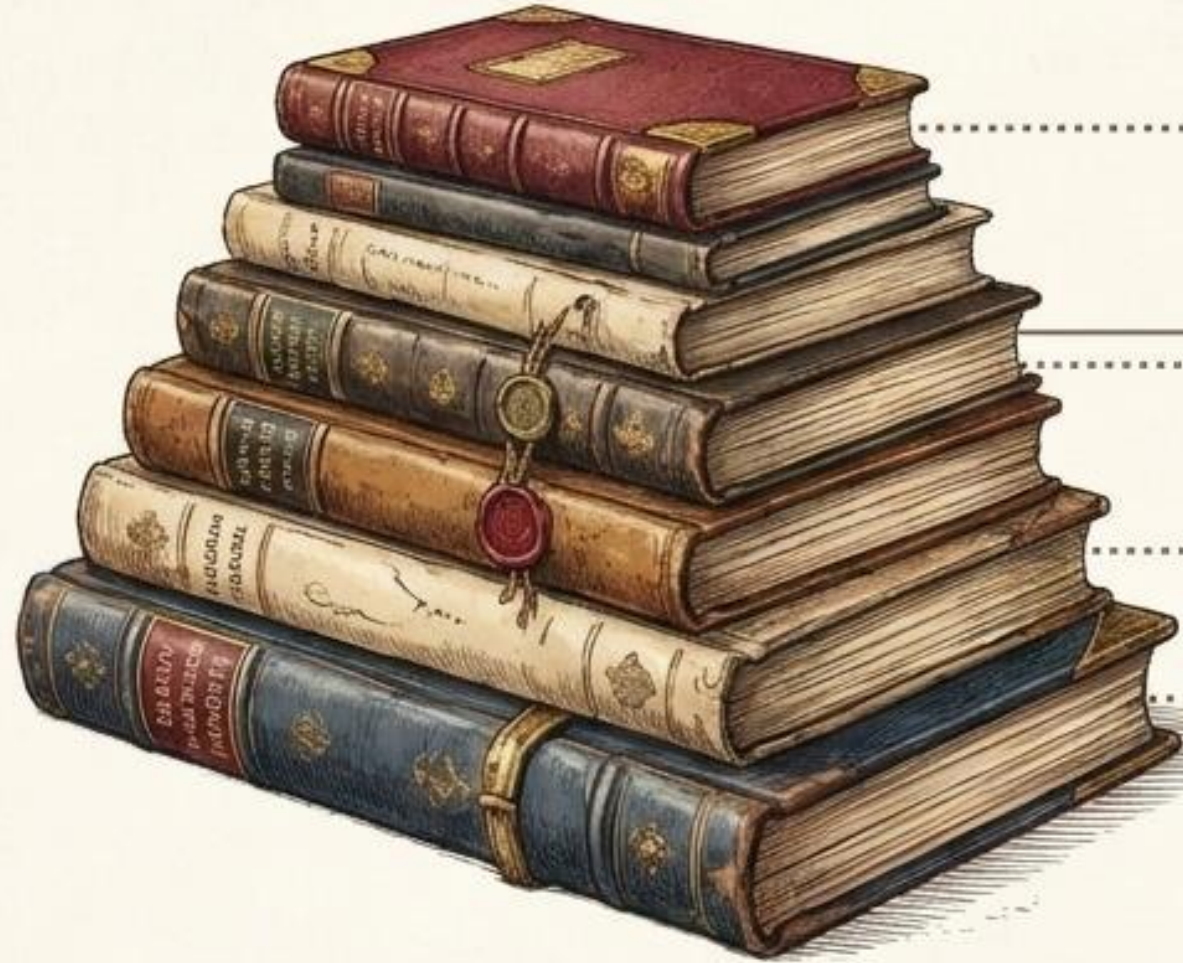
खरीद कीमत: ₹55,000

बिशप द्वारा सुधार की लागत: ₹24,000

कुल लागत: ₹79,000

निष्कर्ष: एडवोकेट जनरल ने माना कि पुराने घर को देकर नया घर लेना एक बेहतरीन सौदा था। पुराना घर नए निवास के बदले में सौंप दिया गया।

# देरी की कीमत: 25 वर्षों का वित्तीय निष्कर्ष



1824 का मूल बजट: ₹60,000 (मना कर दिया गया क्योंकि यह 'बहुत महंगा' था)।

कामौऊतघिंग अत्यल कस्त (1824-1849):

- 11 साल का किराया: ₹79,200
- अंतहीन मरम्मत और विवाद: अगणित खर्च
- 1838 में जर्जर पुराने घर की खरीद: ₹75,000
- 1849 में नए पैलेस की अंतिम लागत: ₹79,000

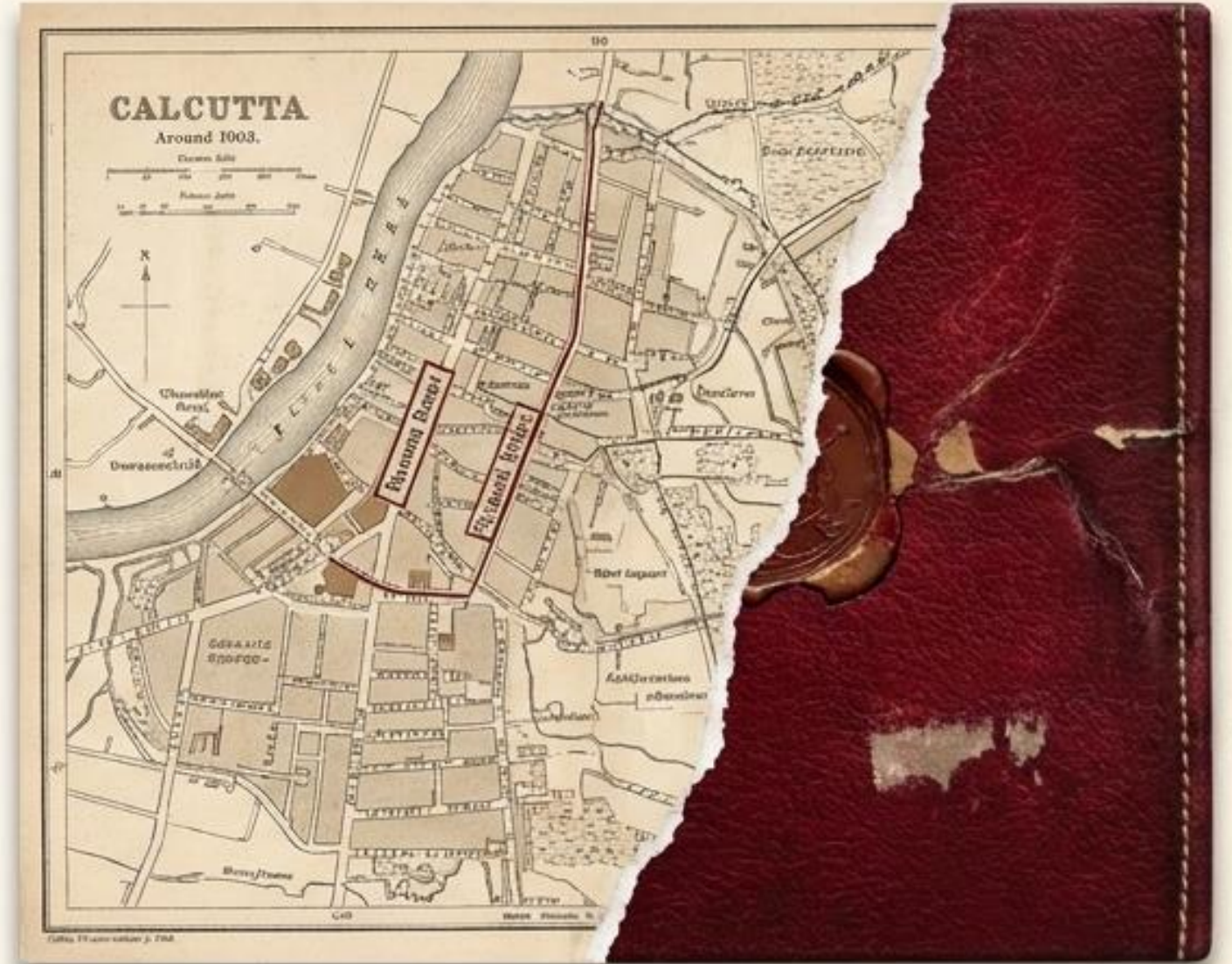
शुरुआत में एकमुश्त ₹60,000 खर्च करने से बचने के प्रयास में, नौकरशाही ने किराए, मरम्मत और अंततः महंगी खरीद के रूप में कई गुना अधिक कीमत चुकाई।

# औपनिवेशिक ईंटों की विरासत

रसेल स्ट्रीट का सफर: 1863 में, बिशप विल्सन के निधन के बाद, पुराना रसेल स्ट्रीट घर प्रिंस गुलाम मोहम्मद को बेच दिया गया।

एक सदी बाद: 1903 तक, यह ऐतिहासिक संरचना श्री जे.ई.डी. एज्रा की संपत्ति बन गई।

निष्कर्ष: 25 वर्षों का यह संघर्ष केवल एक घर की कहानी नहीं है, बल्कि यह कलकत्ता के तेजी से बदलते संपत्ति बाजार और तैशिक नौकरशाही की जटिलताओं का एक जीवंत दस्तावेज़ है।



स्रोत: *Note on the Episcopal Residence in Calcutta, 1824-1849* (C.R. Wilson, 1903)



# CRIMINOLOGICAL INSIGHTS

BY DR. MRIDUL SRIVASTAVA

